AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

प्लेटोः एक महान दार्शनिक

ORIGINAL ARTICLE

Author
पंकज
राजनीति विज्ञान विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

शोध सार

प्लेटो का दर्शन पूर्व–सुकरातिक्स, सोफिस्टों और कलात्मक परंपराओं के अनुरूप है जो ग्रीक शिक्षा को रेखांकित करते हैं। एक नए ढांचे में, द्वंद्वात्मकता और विचारों के सिद्धांत द्वारा परिभाषित प्लेटो के लिए, ज्ञान आत्मा की एक गतिविधि है, जो समझदार वस्तुओं और आंतरिक प्रक्रियाओं से प्रभावित होती है। प्लैटोनिज्म की उत्पत्ति प्लेटो के दर्शन में हुई है, हालाँकि इसे इसके साथ भ्रमित नहीं किया जा सकता है। प्लैटोनिज्म के अनुसार, अमूर्त वस्तुएं हैं (आधुनिक दर्शन से अलग एक धारणा)। बाहरी संवेदी दुनिया और चेतना की आंतरिक दुनिया दोनों से अलग एक अन्य क्षेत्र में मौजूद है, और नाममात्रवाद के विपरीत है)। प्लेटो के दर्शन में एक आवश्यक अंतर रूपों का सिद्धांत है, जो बोधगम्य लेकिन अबोधगम्य वास्तविकता के बीच का अंतर है। (विज्ञान) और अगोचर लेकिन सुगम वास्तविकता (गणित) ज्यामिति प्लेटो की मुख्य प्रेरणा थी और यह पाइथागोरस के प्रभाव को दर्शाता है। रूप पूर्ण आदर्श हैं जिनकी वास्तविक वस्तुएँ अपूर्ण प्रतिलिपियाँ हैं।

मुख्य शब्द

प्लेटो, दर्शन, आदर्शवाद, ज्ञानमीमांशा, आध्यात्मिक.

प्लेटो का दर्शन

प्लेटो का दर्शन पूर्व–सुकरातिक्स, सोफिस्टों और कलात्मक परंपराओं के अनुरूप है जो यूनानी शिक्षा को एक नए ढांचे में, द्वंद्वात्मकता और विचारों के सिद्धांत द्वारा परिभाषित करते हैं। प्लेटो के लिए, ज्ञान आत्मा की एक गतिविधि है (ब्रिसन और प्रेडो 2007), जो संवेदनशील वस्तुओं और आंतरिक प्रक्रियाओं से प्रभावित होती है। प्लैटोनिज्म की उत्पत्ति प्लेटो के दर्शन में हुई है, हालाँकि इसे इसके साथ भ्रमित नहीं किया जा सकता है। प्लैटोनिज्म के अनुसार, अमूर्त वस्तुएं हैं, जो आधुनिक दर्शन से एक अलग धारणा है, जो बाहरी संवेदी दुनिया और चेतना की आंतरिक दुनिया दोनों से अलग एक अन्य क्षेत्र में मौजूद है और नाममात्रवाद (रोसेन 2001) के विपरीत है। उनका दर्शन रूपों का सिद्धांत है, जो बोधगम्य लेकिन अबोधगम्य वास्तविकता (विज्ञान) और अगोचर लेकिन बोधगम्य वास्तविकता (गणित) के बीच अंतर करता है। ज्यामिति प्लेटो की मुख्य प्रेरणा थी, और यह पाइथागोरस के प्रभाव को भी दर्शाता है। प्रपत्र पूर्ण आदर्श हैं जिनकी वास्तविक वस्तुएँ अपूर्ण प्रतिलिपियाँ हैं (रोसेन 2001)। द रिपब्लिक प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो द्वारा एक दार्शनिक कार्य है। सुकराती संवाद के रूप में लिखा गया, यह न्याय, नैतिकता और आदर्श समाज के बारे में बुनियादी सवालों को संबोधित करता है। यहां प्लेटो द्वारा 'द रिपब्लिक' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी दी गई है:

'द रिपब्लिक' प्लेटो के सबसे प्रसिद्ध और स्थायी कार्यों में से एक है, जो न्याय की प्रकृति और एक आदर्श राज्य के निर्माण की खोज करता है। संवाद में सुकरात को मुख्य पात्र के रूप में दिखाया गया है और कई अन्य व्यक्ति न्याय की प्रकृति, दार्शनिकों की भूमिका और एक आदर्श समाज की संरचना के बारे में चर्चाओं की एक श्रृंखला में लगे हुए हैं। (रोसेन 2001)

गणतंत्र में शामिल हैं:

- **गुफा का रूपक:** अपने सबसे प्रसिद्ध अंशों में से एक में, प्लेटो ने एक रूपक का वर्णन किया है जहां लोगों को एक गुफा में जंजीरों से बांध दिया जाता है, और वे केवल दीवार पर छाया देख पाते हैं। यह रूपक उन लोगों के सीमित दृष्टिकोण का प्रतीक है जो दार्शनिक सत्य की तलाश नहीं करते हैं।
- **दार्शनिक–राजाओं:** प्लेटो का तर्क है कि आदर्श राज्य का शासन दार्शनिक–राजाओं द्वारा किया जाना चाहिए, ऐसे व्यक्ति जिन्होंने कठोर शिक्षा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया है और जो ज्ञान और न्याय के साथ शासन करने के लिए सर्वोत्तम रूप से सुसज्जित हैं।
- **समाज के तीन वर्ग:** प्लेटो शासकों, योद्धाओं और उत्पादकों वाले त्रिस्तरीय समाज का प्रस्ताव करता है। प्रत्येक वर्ग की विशिष्ट भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ होती हैं, और व्यक्तियों को उनकी क्षमताओं के आधार पर इन वर्गों को सौंपा जाता है।
- **सांप्रदायिक संपत्ति:** प्लेटो के आदर्श राज्य में, संपत्ति और पारिवारिक संरचनाएं व्यक्तिगत लालच और स्वार्थ को खत्म करने के उद्देश्य से सांप्रदायिक हैं।
- **न्याय की खोज:** संवाद व्यक्ति और राज्य दोनों में न्याय की अवधारणा की पड़ताल करता है। प्लेटो के अनुसार, न्याय में प्रत्येक व्यक्ति को समाज में अपनी भूमिका निभानी होती है और यह सामंजस्य एक न्यायपूर्ण समाज की ओर ले जाता है।

आत्मा

प्लेटो आत्मा की सटीक परिभाषा नहीं देता है, लेकिन इसके कुछ गुण दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं, जैसे गति और विचार का सिद्धांत। (प्लेटो 1993, 245 सी)। आत्मा विचारों से, परमात्मा से, अपनी गति से जुड़ी हुई है। आत्मा पर प्लेटो के विचार उनके दार्शनिक कार्यों के केंद्र में हैं, और वे पश्चिमी दर्शन के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्लेटो के संवादों में, विशेष रूप से 'फीडो' और 'द रिपब्लिक' में, वह आत्मा की प्रकृति, इसकी अमरता और भौतिक दुनिया के साथ इसके संबंध के बारे में अपने विचारों को उजागर करता है। 'फ़ेदो' में प्लेटो आत्मा की अमरता के पक्ष में तर्क देता है। वह यह विचार प्रस्तुत करता है कि आत्मा एक अभौतिक, अमर इकाई है जो जन्म से पहले अस्तित्व में रहती है और मृत्यु के बाद भी अस्तित्व में रहती है। उनका सुझाव है कि भौतिक शरीर की नाशवान प्रकृति के विपरीत, आत्मा अपरिवर्तनीय और शाश्वत है। प्लेटो के अनुसार, आत्मा की अमरता रूपों की दुनिया के साथ उसके संबंध से जुड़ी हुई है, जहां अमूर्त, अपरिवर्तनीय अवधारणाएं मौजूद हैं। (प्लेटो. फ़ेदो' जी. एम. ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित)

विचारों का सिद्धांत

प्लेटो के विचारों का सिद्धांत, जिसे रूपों के सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है, उनके दार्शनिक कार्यों में एक केंद्रीय और प्रभावशाली अवधारणा है। यह गैर–भौतिक, अमूर्त संस्थाओं के अस्तित्व को दर्शाता है जिन्हें रूप या विचार कहा जाता है, जो भौतिक दुनिया में हमारे सामने आने वाली भौतिक वस्तुओं की तुलना में अधिक वास्तविक और परिपूर्ण हैं। प्लेटो के संवाद ष्फीडोष में वह सुकरात के चरित्र के माध्यम से विचारों के सिद्धांत का परिचय देता है। (प्लेटो. 'फ़ेदो' जी. एम. ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित। (हैकेट पब्लिशिंग कंपनी, 2000)। प्लेटो अनुभूति पर आधारित ज्ञान की बुनियाद को अस्वीकार करता है। यह मानते हुए कि सीखना वास्तव में एक स्मृति है।

नैतिकता पर प्लेटो के विचार

प्लेटो का नैतिक दर्शन उनकी आध्यात्मिक और ज्ञानमीमांसीय मान्यताओं में गहराई से निहित है और उनके संवादों में प्रमुखता से खोजा गया है, विशेष रूप से 'द रिपब्लिक' और 'द सिम्पोजियम' में। उनके नैतिक विचार सदाचार, न्याय और सर्वोच्च भलाई की खोज के इर्द–गिर्द घूमते हैं। 'द रिपब्लिक' में, प्लेटो त्रिपक्षीय आत्मा की अवधारणा का परिचय देता है, जहां सद्गुण तर्कसंगत, उत्साही और क्षुधावर्धक भागों में सामंजस्य स्थापित करने में निहित है। उनका तर्क है कि एक न्यायपूर्ण समाज वह है जिसमें व्यक्ति व्यक्तिगत और सामाजिक न्याय को समान करते हुए, दूसरों में हस्तक्षेप किए बिना अपनी भूमिकाएँ निभाते प्लेटो 'रिपब्लिक।' (जी.एम.ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित, सी.डी.सी. रीव द्वारा संशोधित, हैकेट पब्लिशिंग कंपनी, 1992). प्लेटो का रूपों का सिद्धांत उनकी नैतिकता में महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह शाश्वत रूपों के दायरे में उच्चतम अच्छे और नैतिक गुणों का पता लगाता है। उनका तर्क है कि सच्चा ज्ञान सद्गुण की नींव है, इस बात पर जोर देते हुए कि लोग अज्ञानता के कारण अनैतिक कार्य करते हैं। दार्शनिक शिक्षा और स्वरूपों के चिंतन से नैतिक उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है। 'संगोष्ठी' इरोस की अवधारणा पर प्रकाश डालती है, जो नैतिक विकास में प्रेम की भूमिका और अच्छे के रूप में आरोहण को दर्शाती है। प्लेटो का नैतिक दर्शन ज्ञान, सदाचार और आत्मा के संरेखण की खोज पर जोर देता है। उनके विचार एक मूलभूत संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करते हुए, पश्चिमी दर्शन में नैतिकता पर प्रवचन को आकार देना जारी रखते हैं।

राजनीति पर प्लेटो के विचार

राजनीति पर प्लेटो के विचारों की उनके मौलिक कार्य 'द रिपब्लिक' और विभिन्न अन्य संवादों में व्यापक रूप से चर्चा की गई है। उन्होंने शासन और आदर्श राज्य पर एक जटिल और प्रभावशाली दृष्टिकोण रखा। 'द रिपब्लिक' में, प्लेटो आदर्श समाज के बारे में अपने दृष्टिकोण को रेखांकित करता है, जिस पर दार्शनिक–राजाओं, न्याय, सत्य और अच्छे की प्रकृति की गहरी समझ रखने वाले व्यक्तियों का शासन होता है। उनका तर्क है कि इस दार्शनिक–राजा वर्ग को न्याय, ज्ञान और सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए राज्य का नेतृत्व करना चाहिए। प्लेटो व्यक्तियों के चरित्र और राज्य के शासन को ढालने में शिक्षा के महत्व पर जोर देता है। संपत्ति के साम्यवाद और सख्त सामाजिक पदानुक्रम की उनकी वकालत उनके आदर्श शहर में स्पष्ट है जबकि कुछ लोगों ने इन विचारों की सत्तावादी कहकर आलोचना की है, प्लेटो का लक्ष्य एक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज बनाना था जहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी भूमिका निभाए। राजनीतिक दर्शन और सिद्धांत पर उनका प्रभाव गहरा है, क्योंकि उनके विचारों ने राजनीति में दार्शनिकों की भूमिका और एक आदर्श राज्य की प्रकृति के बारे में चल रही चर्चाओं को जन्म दिया है। (प्लेटो. 'रिपब्लिक' जी.एम.ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित, सी.डी.सी. रीव द्वारा संशोधित, हैकेट पब्लिशिंग कंपनी, 1992।)

प्लेटो की दार्शनिक अवस्था

प्लेटो की 'दार्शनिक–राजा' की अवधारणा और उनका आदर्श राज्य उनके राजनीतिक दर्शन के मूलभूत घटक हैं, जिन्हें विशेष रूप से उनके काम 'द रिपब्लिक' में रेखांकित किया गया है। प्लेटो ने दार्शनिक–राजाओं के नेतृत्व वाले एक दार्शनिक राज्य की कल्पना की, ऐसे व्यक्ति जिनके पास सत्य, न्याय और रूपों की गहरी समझ है। ये दार्शनिक–राजा अच्छे के बारे में अपने ज्ञान द्वारा निर्देशित होकर, बुद्धि के साथ शासन करेंगे। प्लेटो के आदर्श राज्य में, समाज तीन वर्गों में संरचित हैः शासक, योद्धा और निर्माता, प्रत्येक की अलग–अलग भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ हैं। राज्य संपत्ति के साम्यवाद का अभ्यास करेगा, व्यक्तिगत स्वामित्व पर सद्भाव और न्याय पर जोर देगा। प्लेटो का राजनीतिक दर्शन न केवल नेताओं बल्कि सभी नागरिकों को आकार देने में शिक्षा, नैतिक विकास और ज्ञान की खोज के महत्व को रेखांकित करता है। जबकि दार्शनिक राज्य के बारे में उनके दृष्टिकोण की सदियों से आलोचना और बहस हुई है, इसने राजनीतिक दर्शन, नैतिकता और शासन के विकास पर एक अमिट छाप छोड़ी है। (प्लेटो 'रिपब्लिक' जी.एम.ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित, सी.डी.सी. रीव द्वारा संशोधित, हैकेट पब्लिशिंग कंपनी, 1992।)

आज के सन्दर्भ में प्लेटो विचारधारा की प्रासंगिकता

प्लेटो की दार्शनिक–राजा की अवधारणा शासन में ज्ञान और नैतिक नेतृत्व के महत्व पर जोर देती है।

समकालीन राजनीति में गहन ज्ञान, नैतिक सिद्धांतों और आम भलाई के प्रति प्रतिबद्धता वाले नेताओं की आवश्यकता पर निरंतर चर्चा होती रहती है। प्लेटो का न्याय और आदर्श समाज के निर्माण पर जोर आज भी प्रासंगिक है। न्याय, समानता और आम भलाई की खोज आधुनिक राजनीतिक और नैतिक प्रवचन में एक केंद्रीय चिंता है, जिसमें सामाजिक न्याय और वितरणात्मक न्याय के बारे में बहस भी शामिल है। प्लेटो ने शिक्षा और नैतिक विकास के महत्व पर बल दिया। आज के संदर्भ में, शिक्षा को आलोचनात्मक सोच, नागरिक जुड़ाव और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के साधन के रूप में देखा जाता है। व्यक्तिगत और सामाजिक सुधार के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा को बढ़ावा देना आधुनिक शैक्षिक दर्शन के अनुरूप है।

निष्कर्ष

प्लेटो के ज्ञानमीमांसीय और आध्यात्मिक विचार, विशेष रूप से उनके रूपों का सिद्धांत, वास्तविकता, ज्ञान और सत्य की प्रकृति पर चर्चा को प्रभावित करना जारी रखते हैं। वास्तविकता की प्रकृति, नैतिक यथार्थवाद और सत्य की निष्पक्षता के बारे में समकालीन बहसें अक्सर प्लेटो की अवधारणाओं से जुड़ी होती हैं। प्लेटो की लोकतंत्र की आलोचना और लोकलुभावन राजनीति और लोकतंत्र के बारे में चिंताएं आज के राजनीतिक परिदृश्य में प्रासंगिक हैं। उनके काम लोकतांत्रिक प्रणालियों की सीमाओं और अनियंत्रित बहुसंख्यकवाद के संभावित खतरों पर चर्चा को आमंत्रित करते हैं। सामान्य भलाई और राज्य की सद्भाव पर प्लेटो का ध्यान सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को दूर करने और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिका के बारे में चर्चा में स्थायी प्रासंगिकता रखता है। समाज में दर्शन की भूमिका के प्रति प्लेटो की प्रतिबद्धता की प्रतिध्वनि समकालीन है। सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने में आलोचनात्मक सोच, सार्वजनिक प्रवचन और दार्शनिक प्रतिबिंब का महत्व सार्वजनिक जीवन में बौद्धिक जुड़ाव के आधुनिक आह्वान के अनुरूप है। हालांकि आलोचकों और चुनौतियों के बिना, प्लेटो के विचार आज की जटिल और लगातार विकसित हो रही दुनिया में प्रेरणा और दार्शनिक जांच का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करते हैं। वे हमें नैतिकता, राजनीति और एक न्यायपूर्ण समाज में अच्छे जीवन की खोज के बारे में बुनियादी सवालों से जुड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं।

ग्रंथ सूची

1. अरस्तू. 1991. 'द मेटाफिजिक्स' 1991. https://www.amazon.com/Metaphysics-Great-Books Philosophy/dp/08
2. प्लेटो, और बेंजामिन जोवेट, (1991). द रिपब्लिकः द कम्प्लीट एंड अनब्रिज्ड जोवेट।
3. अनुवाद. पुरानी किताबेंः प्लेटो, बर्नार्ड विलियम्स, एम. जे. लेवेट, और माइल्स बर्नयेट, (1992). थीएटेटस, हैकेट प्रकाशन।
4. अहबेल–रैप्पे, सारा, और रचना कामटेकर (संस्करण), (2006), ए कंपेनियन टू सुकरात, ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल।
5. एलन, डेनिएल, एस., (2010), प्लेटो ने क्यों लिखा, माल्डेन, एमएः विली–ब्लैकवेल।
6. प्लेटो. 'फ़ेदो' जी. एम. ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित।
7. जी.एम.ए. ग्रुबे द्वारा अनुवादित, सी.डी.सी. रीव द्वारा संशोधित, हैकेट पब्लिशिंग कंपनी, 1992
8. अन्नास, जूलिया, (2003), *प्लेटोः ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन,* ऑक्सफ़ोर्डः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. बेन्सन, ह्यूग (सं.), (2006), *ए कंपेनियन टू प्लेटो,* ऑक्सफ़ोर्डः ब्लैकवेल।
10. ब्लोंडेल, रूबी, (2002), *द प्ले ऑफ कैरेक्टर इन प्लेटो डायलॉग्स,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

——==00==——